अष्टावक्र गीता का परिचय

__अष्टावक्र गीता__ का यह परिचय मुख्यतः इसी ग्रन्थ की निम्नलिखित दो व्याख्याओं पर आधारित है -

[1] "अष्टावक्र गीता", व्याख्याकार - स्वामी प्रखर प्रज्ञानंद, विद्या विहार, नई दिल्ली, 2018

[2] "अष्टावक्र गीता", अनुवादक एवं व्याख्याकार - श्री नन्द लाल दशोरा, रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार, 2008

- **अष्टावक्र गीता भारतीय अध्यात्म का एक अत्यधिक दार्शनिक एवं शिरोमणि ग्रन्थ है।**
- जैसे श्रीमद्भगवद्गीता (श्रीमद् भगवद् गीता) भगवान् श्रीकृष्ण (वक्ता) और अर्जुन (श्रोता) का संवाद है, वैसे ही **अष्टावक्र गीता ऋषि अष्टावक्र जी (वक्ता) और मिथिला के राजा श्री जनक (श्रोता) का संवाद है।**
- अष्टावक्र जी का उपदेश संस्कृत के श्लोकों (verses) के रूप में है। ये श्लोक गणित के सूत्रों (formulas) की भांति प्रमाणों पर आधारित, अत्यन्त संक्षिप्त एवं सार-गर्भित हैं। संभवतः इसीलिए इन श्लोकों को सूत्र कहा गया है।
- श्रीमद् भगवद् गीता में कुल 700 श्लोक हैं, जबकि अष्टावक्र गीता में लगभग 300 श्लोक (सूत्र) ही हैं। जहाँ भगवद् गीता 18 अध्यायों (chapters) में व्यवस्थित (organised) है, वहीं अष्टावक्र गीता में कुल 20 प्रकरण (episodes, घटनाएं या उपकथाएं) हैं।

- अष्टावक्र जी ने राजा जनक को यह उपदेश किस परस्थिति में दिया, इसका अत्यंत रोचक वर्णन स्वामी प्रखर प्रज्ञानंद अपनी पुस्तक [1] की भूमिका में इस प्रकार करते हैं -
  - एक बार राजा जनक ने तत्त्व-ज्ञान पर शास्त्रार्थ के लिए एक सभा का आयोजन किया। इसमें भाग लेने बड़े-बड़े विद्वान एकत्र हुए। अष्टावक्र जी के विद्वान पिताश्री भी सम्मिलित हुए। वे सबसे तो जीत गए, पर एक पंडित से हार रहे थे। ऐसे समय पर अष्टावक्र जी, जो मात्र 12 वर्ष के बालक थे, जब **अपने आठ अंगों से टेड़े-मेढ़े शरीर** से चलते हुए सभा में पहुंचे तो उनकी आकृति को देख कर सभी सभासद हँस पड़े। कुछ देर रुकने के बाद अष्टावक्र जी भी जोर से हँसे।
  - इस पर राजा जनक ने अष्टावक्र जी से पूछा - "इन विद्वानों के हँसने का कारण तो समझ में आता है, पर आप क्यों हँसे?"
  - **अष्टावक्र जी ने कहा - "मैं इसलिए हँसा कि इन चर्मकारों की सभा में मैं कहाँ से आ टपका!"**
  - सर्वत्र सन्नाटा छा गया। राजा जनक ने जिन्हे विद्वान् समझ कर बुलाया था, उन्हें कोई चर्मकार कह दे, यह उन विद्वानों के साथ-साथ राजा जनक का भी अपमान था। सभासद अपना रोष प्रकट करते, उससे पहले ही राजा जनक ने स्थिति सँभालते हुए अष्टावक्र जी से पूछा - "आपके कथन का क्या अर्थ है, यह मैं नहीं समझ पाया।"
  - इस पर श्री अष्टावक्र जी ने कहा - "बहुत सीधी सी बात है, चर्मकार (cobbler) चमड़ी का ही पारखी होता है, वह ज्ञान को क्या समझे! ज्ञानी ज्ञान को देखता है, चमड़ी को नहीं। इनको मेरी चमड़ी (यानी

टेड़ा-मेड़ा शरीर) ही दिखाई दिया, जिसे देखकर ये हँस पड़े। **ये चमड़ी के अच्छे पारखी हैं। अतः ये ज्ञानी नहीं, चर्मकार ही हो सकते हैं।** शरीर के वक्र आदिक धर्म (characteristics) आत्मा के कदापि नहीं हो सकते। हे राजन्! ज्ञानवान तो आत्म-दृष्टि (spiritual insight or the inner eye) से संपन्न होता है। वह आत्मा को ही देखता है, जबकि अज्ञानी चर्म-दृष्टि ही रखता है। चर्म-दृष्टि (physical eyes) से अज्ञानी देखते हैं, ज्ञानवान नहीं।"

- अष्टावक्र जी के इन सार-गर्भित वचनों को सुनकर राजा जनक बड़े प्रभावित हुए और उनके चरणों में गिर पड़े। तत्पश्चात् उन्हें ज्ञान का उपदेश देने हेतु अपने महल में आमंत्रित किया।
- महल में राजा जनक ने अष्टावक्र जी को सिंहासन पर बैठाया। स्वयं उनके चरणों में बैठकर शिष्य-भाव से अपनी जिज्ञासाओं का बारह-वर्षीय बालक अष्टावक्र जी से समाधान कराया।
- राजा जनक और अष्टावक्र जी के बीच हुआ यह संवाद 'अष्टावक्र गीता' के रूप में श्लोक-बद्ध है।"

- श्रीमद् भगवद् गीता में श्रीकृष्ण का उपदेश सम्पूर्ण जीवन-दर्शन (philosophy of life) को दर्शाता है तथा कर्म-योग, ज्ञान-योग और भक्ति-योग को संसार-बंधन से मुक्ति के तीन मुख्य मार्ग बताते हुए तीनों का प्रतिपादन (explain) करता है। परन्तु अष्टावक्र गीता में अष्टावक्र जी ने वैराग्य और आत्म-ज्ञान को ही मोक्ष-प्राप्ति का एक-मात्र मार्ग बताया है और इसी दर्शन (philosophy) का प्रतिपादन किया है।
- यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भगवद् गीता केवल भारत ही नहीं अपितु सारे संसार में सदियों से सर्वाधिक लोक-प्रिय धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थ रहा है और असंख्य लोगों के जीवन को प्रभावित करता रहा है। परन्तु अष्टावक्र गीता का जनसाधारण पर सीमित प्रभाव ही रहा है। इसका कारण श्री नन्दलाल दशोरा अपनी पुस्तक [2] की भूमिका में इस प्रकार लिखते हैं –

"श्रीकृष्ण का भगवद् गीता का उपदेश मुख्यतः सांसारिक व्यक्तियों के लिए है, अतः उसका महत्त्व सबके लिए है। किन्तु अष्टावक्र जी का उपदेश केवल मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा रखने वाले मुमुक्षु व्यक्तियों के लिए ही है, इसलिए सामान्य-जन इससे अप्रभावित रहा है। यह साधु-सन्यासियों, ध्यानियों व अन्य साधना-रत् व्यक्तियों का सच्चा मार्ग-दर्शक है।"